DPN 6483

महाकाल तन्त्र

Title : MAHĀKALA TANTRA

Run. No. 7208

Cat. No.

Micro. No.

Subject मन्त्र Tantra

Religion : Hindu ✓ / Bauddha

Language : Skt. ✓ / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 17.3 X 8

Folios 2 – 14

Lines (in a page) 6

Missing folio 1.

Compl. / Incompl. ✓

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script : New. ✓ / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper ✓ / thyasaphu /

Condition : fine / damaged ✓ by worms, rats ✓, water ✓ /

Beginning, colophon, post-colophon :

X X

पातुपत्तस … ॥ नहाष ग म स्तुन मन्त्रु पदिवा॰ ॥ ॐ मव ॥ ल…

ॐ क्रूं रूं ट्रूं स्वाहा ॥ द्वि लू ज स्या ॥ ॐ ज्रां कीं क्रूं क्रूं रूं ट्रूं वा व उ लू ज स्य ४ ॥

मकां ह्रैं यव सर्व्वसिद्धिदायक ह्रां क्रूं क्रूं … टष टलू ज स्यवा ॐ

ह्रां॰ क्रूं ट्रुं ज्रीः ह॰ … लू ज स्य ४ ॐ ज्रीः क्रं … ढं किलिरम…

हानाद कपाल ॐ ग्रीं ह॰ दु हरप सर सिद्धिदायकाय…

स्वाहा दशलूजस्यमक्रः ॥ ॐ दक्षालक ट्रूं पवायलंसं … स्वाहा

ह्रौं ॥ ह्रीं ह्रूं ह्रः स्वाहा ॥ ज्वा द स ॐ ह्रः स्यमन्तु ॥ ॐ सर्व्वकर्म्मकार
ः सर्व्वपूर्व्विघ्न मस्कृतं मान्द्रय तं ॐ वन त्र यीयमिस्कतिर्णकत्यानि ॥
ॐ यमय हृ ॐ ह्र यरखलपा त ॥ लस्पा हिरग्रू कारवलि हृः
ग हर मवा स्म हा ह्र्य वायस्वाहा ॥ स ॐ ह्रौं लू ह्र स्युम्
नत्रा ॥ ग ॥ वलि दद्यात्र तिदिनं सर्व्वसिध्यार्थ ॥ ॐ मां मं चं ॐ
यपाताय ह्रूं वज्र ठः ॥ ह्रा न नलस ह्राम कुः ॥ ॐ चचकिधय २ ॥

२ ह्रूं इच्छ मू क स्यु प ॐ हूं स्वाहा ॥ पचन ॐ म ॐ ॥ ॐ ह्रीं ह्रूं मं कमा
ल विकमा लाक्रमहा या ग स्व च सर्व्वदायू काय स्वाहा ॥ वाषा ते ॐ ॐ
स्यमन्तु ॥ ॐ श्री ॐ गृहन्न वलि ह्रूं क द्र मध्य मां मांस वृक्षधूपच ॐ ठ
लपाताल भूष नाग दूव ज्र ॐ च ॐ स गृहन्न र ॐ दवाली हाल हा ॐ
हपा हि रक्ष प्व ह्रूं ह्रः ह्रूं ह्रूं म हाहू हा स गर्ज्जा रग ह्रूं यर कूह्रूंह्रूंस्य य
ह्रूं ह्रूं स्वाहा प्रा ॥ त्रि दिनी या ह्रूं वलि दायार्थ मा वह्न दिकयाम दि

नामं मांसचक्रपञ्चड्वजकविलानिदिवसन्तुलानुलाहयच
कथयिष्यामि मास्य नसिद्धिदपीदानिः वषकं नयादीक्रति त्व
नागि ॐ ओँ ओँ हूँ दद्रुस्वाहा नन मन्त्र नाज्ञाउ वावानि मात्र
सर्वपापाहि ॐ यं मांसक्रिस दाउफल सर्वसिद्धानि दनया
प क्रूस दत्र ज ह्याव ब्रह्मा स धयत्र ना क्रूं वीरयत्र ज ह्याव ब्रह्मवस
मानयति लिऊ दयाज्ञापी क्रूस ॐ सर्वदवय ॐ क्रूं वीसक्रिवन्नां २७

२ मग्रा को लगग
ब्रह्मयक्रिव ननमन्त्रा दावा कथा वस्त्रमन्त्रः ॐ म दा कालं हूँ हूँ
दद्रूरस्वाहा नासाक्षानगमकुपा ॐ म दा वी दक्षव हूँ दद्रू दा ज्रूगि
मन्त्र मरुप ज्वाला मालय तूना ॐ ओँ ह्रीं ह्रीं ॐः दवद ॐ मान मानय हूँ
दूमा मानह्न मन्त्रा ॐ ॐ हूँ व दक्षवनी हूँ श्री स्वाहा दा स्वन्द दक्षवनी मन्त्रं वी
ॐ लाँ कँ कुलिङ्गाल्वनी हूँ स्वाहा ॐ माँ मा दस्वनी हूँ श्री हूँ मा दस्वनी मं
मन्त्रवा ॐ कालीकलानीश्रीः ॐ ॐ हूँ दद्रू स्वाहा दा ॐ वं नमस्कीम
क्रथा ॐ वामच्छन्द दरप वरहुं दवग द्गा हूँ ह दद्रू स्वाहा दावा

देष्याव सिमन्त्र॥ॐ ह्रीः हः हूँ ह्रीं हूं स्वाहा ॥ उमाजप्यामन्त्रः॥
ॐ आः हूँ वाक्काय वाक्चित्ताधिष्ठानमन्त्र॥ हूः ॐ ॐ ह्रीं श्रीं देवदत्त
ः मानय स्वाहा हूँ हः हः॥ सर्वमारनमन्त्रः॥ ॐ ह्रीं हः हूँ हूं कर्म
स्वाहा टय हूँ हः हः॥ भूनन निय तीरूपाख्यमानल्गनाफूल
सिकां कुलल स्वाहा स्थापय उद्धातयति सफल उद्धातनमन्त्र
॥ ॐ मँ हूँ ॐ ह्रीं स्फूं नमन्त्र॥ फलामन्त्रं प्रप थ्यहानयत्र ॥ ४

ह सिस्फू म्हूनी ॐ पः हः हः टीक्षा टक स्फू स्फू नगमामाख्य
नहानय वाज्ञवस्फू म्हू नीवा ॐ म्हूः हासर्व पञ्जूनस्फू म्हू
नमाहूय हूं हः टी थ्यापुरसर्वा सिसफ वा वीप्रप स्फू हः थ्यवा
महि षांड्व मह स्फि ह्वह्व गमय थ्यापुर हलूका ॥ स्फू
म्हूनी प्याकीक्ष्व वी स्फू कस्य वं हः नयम्हडप स्फूस्फू नमन्त्र
॥ ॐ ह्रीं ॥ मी गया म्हू दत्तु हः श्रीं हूं हः ॥ डप स्भादिस्फू

मूनमन्त्रः॥ ॐ महानीय हूँ रु हू वासकधाय धू लिः यव्याप्रि
वासर्पमहानयत्नवासर्पा मू नी वा ॐ मादिनू ि थ २ हूँ थ
हाः स्फु मू न घू कायस्यवा ॐ घैं हूँ म्रौ वामाहानमन्त्र॥ ॐ द ४
कह२ मालिनि मूप्र साधय२ महाकालू पू छ्वाल्ह ह्रैं सप्र दि ।
सिमालय२ ॐ सर्व दूषप्र दूष्का नू गं क्रा२ मा क२ स्वादि२ ह्रा
फ्री द ह२ पव२ त्तु लू२ यँ हूँ रुद ॐ दे व लिंग हू२ हीँ स्वा

ॐ

हा

वूछ्व सास न स्याष कार्य कू र्ध क्रुस सवा या दिय त्वन नमक्ले हूः
पू ऋतु न कपाल न द्वा भी सि दवा व लिं द थ्या नू क ब्लाघ्र स्या
हा सिद्व य क्ले प्रे ज पा ल व कि धू वंज्ञा गि त दा ह न प्र ग्र क्ल क मू ब्ल
नम्ल ठ ति वी म म हा व सिमक्रः॥ ली ठ न पि सवा ॐ वा मू र हु ल न२
द ल२ हूँ रु हू वा म्मा र ह्न म क्रः॥ ॐ हूँ मौं मौं मैं भ ज य स्वा हा॥ श स क्र
मा न क्ष म क्रः॥ क्र थ र ह ग वा नू बोधि सत्व मा हा सत्वा म हा का रू

महाकाल ११

हिकारध्यश्च॥ ॐ कपाल विकराल विकट्टज्वलनचूड्वर किलीर

महाकं काल हुल ॐ ह्रीं ह्रीं वँ वँ मँ ह्रूँ ह्रूँ महानन्दज्वालाय स्वाहा॥

स्नन नम क्रुद्ध प्रतिदिन सकथाप्रपथ्य नुङ्झालय तु सर्व ३

जनप्रियारवनीसर्वसेनेप्रियोहंकेन॥ वँ ह्रीं कुयामहया

त्रिभुवं सर्वकार्य्यादिकं प्रसाधयितुमिच्छति यदि तदा ह्रि

गुरु ह्वनाभाग न सर्वसोधनेश्वारानेन्द धाचनि ममा

महाकाल ११

महाकालस्य मन्त्र॥ ॐ महाकालू ह्रीं ह्रीं ह्रूँ कूँ दस्वाहा

॥ सर्वक[illegible]साध्य कुनतिय हिति॥ देवता हि

षकं श्वाङ्गुः मः प्रध मीदं [illegible] बीज माभक

सर्वीयम नँ अक्षत देवी हिः॥ अर्घपात्रदीयतं सूयतिम

त्रे नाधिष्ठिा नँ ख वा ॐ कालक्षभहि नूयन स्वाहा॥ ॐ ज्ञूक्ष विधि

त स्वाहा॥ उदकादि कन्दीय नँ व यक्ष्म मृ न दी नैवद्या

चमित्रापापिपद्युपसिग्धर्ष्ठ देवतीनांपृष्ट्यसूक्ति ह्र वर्तिकि
क्रुसिस्तूगन्धप्रीभारिचर्थिष्ठ न्समयपोचयेकि सर्व्व
द्वा॰ध्वत्रिपहियार्रिधूर ॥श्रीमहाकालतन्त्रराजेद
वताहिषकपल॥ ॥देथ्याद्दयाह गवानूक्रमरख्याछायेक १
थयर्दे मायप्रत्रीहवथदि सखार्थमय नाहिदे वाहगवादवा
श्ठमपहलादिषूसर्व्वप्रकथनीयंमयादेविपर्ध्वकूल

विद्धयन्त्रयागिप्रतिदिनंसिद्धिनस्यनियतद्रलदें॰
ती॥ अथप्रथमपूजाप्रदायनंपापाधिदक्षिणादिकर्थ
वयत्रु॰वक्षविद्यापिंहवयिवाचकोप त॰॥ऊँसूर्य ताक्ष
नवजस्वहावामकोद ॰ निकृत्वाप्रावयन्नसर्व्वरक्षाछनियै
महाकालीप्रथमंश्रीमद्देवपिंगन्धछिकूह्लौवाममूलंजूक्रद
ऊँदेवख्यामीथ्याध्रवम्मध्विचधर्येमूहु मोचापूर्वभिवीदेव

र्घस म्वा दचि नागम ह्नन ह्लषिनी अष ३ ॐ प्रथम वाम दक्षि
ना ह्लीं श्रायिं क्षिना द वी द्वि गि य कर्ल्हि का ह्ली य ३ ॐ वङ्गे
य ३ थ कू पी नी वा मा ३ ॐ न कूँ पूर्ण कपाली द्वि नी य त्रि ३
ली ल्हि न पी ह्न य ३ थं मू ॐ ग यं जी वा कूँ प्रल्या लि द प
द क्षि नी य ३ यागिनी प्र चि ष्ठि ष्ठि [illegible] नी ॥ पूर्व पू ठ येन्द्र ३
ली क ३ कपाल द ह्लौं गर्भ च व ह्म मू कू क ह्ली ड क्षा

क ठ र्ह्ल व ॥ दि ३ ह्न पू ठ यं ब्रं की कृष्ण व ह्म न [illegible] न्या मू कू क
ली ङ्कू कल्हि कपा द ह्लौं प्रल्या लिं द प दक्षि ना वि क ठ दं क्षौं
पश्चि मू पू ठ कालिका कृष्ण वर्ध्वा नि स्रू ला भ ल द ह्लां मू कू क
ली ङ्कैं कर्थ विय रा ३ ल य क्र लि क ज्वा ची उर्द्ध द ह्लां वाम कपालें नी
ल व ह्म य स व्री द्व व मि ह्लाय ना य ३ यागीनी ह्लि ८ प चि म की यं ल
ग व क्षैं द श्या लि क्षि ना नि स द ह्लीं पू ठ क्षं च र्ह्ल स थि नं द वं ७ न ध

श्रागज्ञ्याभवति ॥ देव्युवाच ॥ हे भगवान् कथं सिद्धिर्जायते नाथ ॥
स्वकिय देवतानां चैव ॥ भगवानुवाच ॥ उमा देवि याग मर्मा ॐ श्रीम
हालानि नारि ॐ यं मे ध्वं वंना रुच्यते न हि सिद्धोस्मि सिद्ध
ॐ पं प्रथम मम स्वामकार्यं सिद्धि मह मंचाप्र हूं मे पि कार य
श्रागीनि हं लज्ञ भह ॐ क्रमहल पलि क्रयना र्यं यनादि हिं ॥ मह्राम
सि ल्भ कूद दनपञ्चामृत मपिह ॐ यहि ल्यी सिद्धं कि सिद्धि

काद्धि स्म यागमय यं कूल पदाविहा यन्तू ॥ कथमति सिद्धिय
नस्यान नदं दानि पथमं पूजा पदार्थं कृत्वा नानागं ध्यादि कैव द्वादि
ॐ कारैर्धूपदीपाय पूजा ॥ दिक्काग्य यन्तू ॥ पूजनीं धूम्रमहा हं नं वैपाद्यादि
द सना पञ्चअञ्च ब्रह्म विहा यी ह्र वयन्तू ॥ कथादि ध्यान क्रकू
र्यात् वाम दक्ष श्रीकाय दक्षिण स्तना धिष्ठानं ॥ ॐ थानाभू
४ ॥ ॐ चक्षु षीः श्री वाम कर्ण ॥ ॐ अः ४ ॐ दक्षिण नासिकायां ॐ

[illegible]

[illegible]

15

10

5

0 cmts 5 10 15

तुवाउँकलाचविकाग्रासमद्यानदुकुँगृद्ना२कठाकखा ए २

वमकु॥सिद्धिमतुतचडुर्गृदीलामूश्चप्रऊियखद्विर६भ्य॥

हवतिवृद्धियद्‍ [illegible] छहायप्रयागः॥भूकसीऊाहवति॥ॐमाहि

ष्मासिनि३प२३पाहि२घन२पाठयश्वल२ढ्रुँद्रीःकँद्रः।भूनम

ननसकुदपथ्व६ग नासनचपतकंपातसेपादुकुचीऊाहवति

॥ऊदिनहवतितदाहूमवपीक्षैनीतश्रीकाचिस्यी॥घूतलविय ११

थापक्षेविंशतिकूद्दनचर्लीनकूदूयातवाउँदमू२उँश्वषूऊ

स्वादाचाहूहिप वमर्कःः॥ ० ॥वयगुदिद्याटूचातिऊनपूसा

प्रीि [illegible] याद्विगुह्लनर्वचासिमाद्विर्वँकूँड्ऊ॥मिऊ२गृद्नवलिम

दाकिल्ल३कूलूकुउस्वादा॥मावऊमूलिकानचमासबदिन

गन्धधूपमालादीपवूहूकूतधूंक्षपताकाहिःपूाध्वर्प्रःत्रि

हिप वमदासिंप्रदायसफदिननालेरतूायसकर्महि

षादशोऽध्यायः ॥०॥ ॐ कटीमजः हूँ ॥ अश्मचक्रं कुर्यात् ॥ ऊ
पलं षष्ठक दिनाल्पकं पयसा गच्छति नदा विकेनी यँ ॐ य
ऊ किलकीला नाम कूटं काचपक्वे दिशा वध्यमूस्य वंध्य दन्त १२
वध्य२स सर्वविद्रि हूँ यं हूँ फट् स्वाहा ॥ अथ नमक्तुल्लमसरूकुर्यात्
॥ तत्रायं मन्त्रः ॥ ॐ महाक्रूं हूँ२ दह२ स्वाहा कृष्णः अष्टमी नदीलि
लगत्वा अपचाडित पूर्ष्यं नमक्तुली कृत्वा वाशलूकाटनपद

[illegible]
पी कुर्यात् ॥ ॐ सूँ मः हूँ ङः वं क्रीं ॥ तत्रा मन्त्रः ॥ ॐ ऊः हूँ दह ॥
तत्रायं मन्त्रः ॥ ॐ आगच्छ महा हूँ हाः हाङ्कृति ॥ अथ नवपटलः ॥०
॥ तत्रायं मन्त्रः ॥ ङः हूँ दह दह स्वाहा ॥ वामूलय कृत्वा ॥ ॐ जां अमूकिका
मदविभ्रमकस्य महाकाय हूँ दह स्वाहा ॥०॥ ॐ स्त्रीं ऊः
अमूकी शिष्या पिता वीवाह नमं यं ध्रदाय स्वाहा ॥ कृष्णा ष
ष्ट्यां कादस्या वा कृष्णात्पचपक्षे शत नक्षत्र मधु

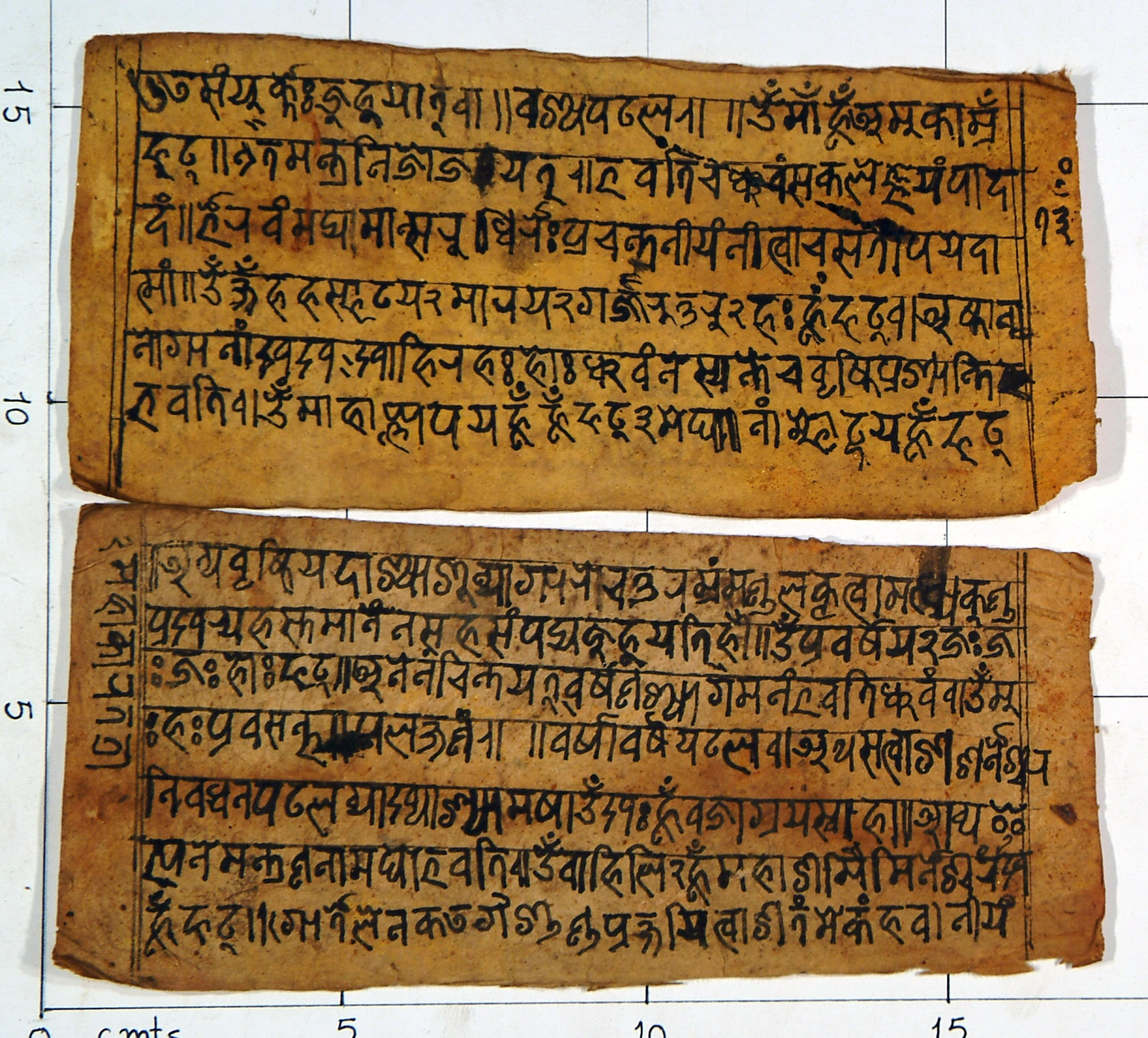

cmts
5
10
15

॥ ७ ॥ नडानैं द्युलस्प्र ग्लाय ग्ना ॥ कृष्णा ष्क ध्यांचा नों थ्या प्युत्र मडपविड ॥
पक्ष याेगि हिः सद्दावयत्स कंद्रूपानिय्ये ॥ के उस्य हूँ द्रू किं उ याय
ग्धुव्वी ॥ वउदस्यीपवथ्यागीनी हिःसदावयं ग ॥ नाना दवा थ्या दिक क्ष
मदिना क्षद्रू द ग्रयनपूर्व्वी क्रूमकं क्रूपें ग सद्ठी भकंया द्रूपलीं ॥ १४
य ग्धुव्वी ॥ षना ज्ञा पद्रु वा ए वद्य दा ग दें वद्दू द्रूया ना ॥ घि ल्लि क्रूल पूर्ष्य
सद्द स्प्र पक्ष कं मदिना ना सर्व्व पग क्षः पलायकें ॥ ॐ दीः हूं पेनगन्क्ष ॥